



## दांडी मार्च

**दांडी यात्रा** या **नमक सत्याग्रह**, महात्मा गांधी के नेतृत्व में औपनिवेशिक भारत में अहिंसक सविनय अवज्ञा का एक कार्य था। चौबीस दिवसीय मार्च 12 मार्च 1930 से 6 अप्रैल 1930 तक ब्रिटिश नमक एकाधिकार के खिलाफ कर प्रतिरोध और अहिंसक विरोध के प्रत्यक्ष कार्रवाई अभियान के रूप में चला। इस मार्च का एक अन्य कारण यह था कि सविनय अवज्ञा आंदोलन को एक मजबूत उद्घाटन की आवश्यकता थी जो अधिक लोगों को गांधी के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करे। गांधी ने इस मार्च की शुरुआत अपने 78 भरोसेमंद स्वयंसेवकों के साथ की थी।<sup>[1]</sup> मार्च 240 मील (390 किमी), साबरमती आश्रम से दांडी तक फैला, जिसे उस समय (अब गुजरात राज्य में) नवसारी कहा जाता था।<sup>[2]</sup> रास्ते में भारतीयों की बढ़ती संख्या उनके साथ जुड़ गई। जब गांधी ने 6 अप्रैल 1930 को सुबह 8:30 बजे ब्रिटिश राज नमक कानूनों को तोड़ा, तो इसने लाखों भारतीयों द्वारा नमक कानूनों के खिलाफ बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा के कृत्यों को जन्म दिया।<sup>[3]</sup>

दांडी में वाष्पीकरण द्वारा नमक बनाने के बाद, गांधी तट के साथ दक्षिण की ओर बढ़ते रहे, नमक बनाते रहे और रास्ते में सभाओं को संबोधित करते रहे। कांग्रेस पार्टी ने दांडी से 130,000 फीट (40 कि॰मी॰) दक्षिण में धरसाना साल्ट वर्क्स में सत्याग्रह करने की योजना बनाई। हालाँकि, गांधी को धरसाना में नियोजित कार्रवाई से कुछ दिन पहले 4-5 मई 1930 की मध्यरात्रि को गिरफ्तार कर लिया गया था। दांडी मार्च और आगामी धरसाना सत्याग्रह ने व्यापक समाचार पत्रों और न्यूज़रील कवरेज के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की ओर दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया। नमक कर के खिलाफ सत्याग्रह लगभग एक साल तक जारी रहा, गांधी की जेल से रिहाई और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में लॉर्ड इरविन के साथ बातचीत के साथ समाप्त हुआ।<sup>[4]</sup> हालाँकि नमक सत्याग्रह के परिणामस्वरूप 60,000 से अधिक भारतीयों को जेल में डाल दिया गया,<sup>[5]</sup> अंग्रेजों ने तत्काल बड़ी रियायतें नहीं दीं।<sup>[6]</sup>

नमक सत्याग्रह अभियान गांधी के अहिंसक विरोध के सिद्धांतों पर आधारित था, जिसे सत्याग्रह कहा जाता है, जिसका उन्होंने संक्षेप में "सत्य-बल" के रूप में अनुवाद किया।<sup>[7]</sup> शाब्दिक रूप से, यह संस्कृत के शब्द सत्य, "सत्य", और अग्रह, "आग्रह" से बना है। 1930 की शुरुआत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ब्रिटिश शासन से भारतीय संप्रभुता और स्व-शासन जीतने के लिए अपनी मुख्य रणनीति के रूप में सत्याग्रह को चुना और अभियान को व्यवस्थित करने के लिए गांधी को नियुक्त किया। गांधी ने 1882 के ब्रिटिश नमक अधिनियम को सत्याग्रह के पहले लक्ष्य के रूप में चुना। दांडी के लिए नमक मार्च, और धरसाना में सैकड़ों अहिंसक प्रदर्शनकारियों की ब्रिटिश पुलिस द्वारा पिटाई, जिसे दुनिया भर में समाचार कवरेज मिला, ने सामाजिक और राजनीतिक अन्याय से लड़ने के लिए एक तकनीक के रूप में सविनय अवज्ञा के प्रभावी उपयोग का प्रदर्शन किया।<sup>[8]</sup> 1960 के दशक में अफ्रीकी अमेरिकियों और अन्य अल्पसंख्यक समूहों के नागरिक अधिकारों के लिए नागरिक अधिकार आंदोलन के दौरान गांधी और मार्च टू दांडी की सत्याग्रह शिक्षाओं का अमेरिकी कार्यकर्ताओं मार्टिन लूथर किंग, जेम्स बेवेल और अन्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। यह मार्च 1920-22 के असहयोग आंदोलन के बाद से ब्रिटिश सत्ता के लिए सबसे महत्वपूर्ण संगठित चुनौती थी, और 26 जनवरी 1930<sup>[9]</sup> को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संप्रभुता और स्व-शासन की पूर्ण स्वराज की घोषणा का सीधे पालन किया। इसने दुनिया भर में ध्यान आकर्षित किया जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी और राष्ट्रव्यापी सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया जो 1934 तक जारी रहा। लगभग 25 दिन बाद 6 अप्रैल 1930 को 241 मील की दूरी तय कर यह यात्रा दांडी पहुंची थी। तत्पश्चात गांधी ने कच्छ भूमि में समुद्र तल से एक मुट्ठी नमक उठाकर अंग्रेजी हुकूमत को सशक्त संदेश दिया और नमक कानून को तोड़ा। यह आंदोलन तकरीबन एक साल तक चला। जिसमें 60,000 से भी ज्यादा भारतीयों को गिरफ्तार किया गया था। 1931 में गांधी और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच हुए समझौते के साथ इस सत्याग्रह को खत्म किया गया। किंतु तब तक चिंगारी भड़क चुकी थी और इसी आंदोलन से 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' की शुरुआत हुई। जिसने संपूर्ण देश में अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में व्यापक जन संघर्ष को जन्म दिया।

### आंदोलन का विषय

दांडी मार्च, जिसे नमक मार्च (Salt March) और दांडी सत्याग्रह (Dandi Satyagraha) के नाम से भी जाना जाता है, मोहनदास करमचंद गांधी के नेतृत्व में किया गया एक अहिंसक सविनय अवज्ञा आंदोलन था। इसे 12 मार्च, 1930 से 6 अप्रैल, 1930 तक नमक पर ब्रिटिश एकाधिकार के खिलाफ कर प्रतिरोध और अहिंसक विरोध के प्रत्यक्ष कार्रवाई अभियान के रूप में चलाया गया। गांधीजी ने 12 मार्च को साबरमती से अरब सागर (दांडी के तटीय शहर तक) तक 78 अनुयायियों के साथ 241 मील की यात्रा की, इस यात्रा का उद्देश्य गांधी और उनके समर्थकों द्वारा समुद्र के जल से नमक बनाकर ब्रिटिश नीति की उल्लंघन करना था। दांडी की तर्ज पर भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा बंबई और कराची जैसे तटीय शहरों में नमक बनाने हेतु भीड़ का नेतृत्व किया गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन संपूर्ण देश में फैल गया, जल्द ही लाखों भारतीय इसमें शामिल हो गए। ब्रिटिश अधिकारियों ने 60,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया। 5 मई को गांधीजी के गिरफ्तार होने के बाद भी यह सत्याग्रह जारी रहा। कवयित्री सरोजिनी नायडू द्वारा 21 मई को बंबई से लगभग 150 मील उत्तर में धरसाना नामक स्थल पर 2,500 लोगों का नेतृत्व किया गया। अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर द्वारा दर्ज की गई इस घटना ने भारत में ब्रिटिश नीति के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आक्रोश उत्पन्न कर दिया। गांधीजी को जनवरी 1931 में जेल से रिहा कर दिया गया, जिसके बाद उन्होंने भारत के वायसराय लॉर्ड इरविन से मुलाकात की। इस मुलाकात में लंदन में भारत के भविष्य पर होने वाले गोलमेज सम्मेलन (Round Table Conferences) में शामिल होने तथा सत्याग्रह को समाप्त करने पर सहमति बनी। गांधीजी ने अगस्त 1931 में राष्ट्रवादी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में इस सम्मेलन में हिस्सा लिया। यह बैठक निराशाजनक रही, लेकिन ब्रिटिश नेताओं ने गांधीजी को एक ऐसी ताकत के रूप में स्वीकार किया जिसे वे न तो दबा सकते थे और न ही अनदेखा कर सकते थे।

### संप्रभुता और स्वशासन की घोषणा

31 दिसंबर 1929 की आधी रात को, कांग्रेस (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) ने लाहौर में रावी के तट पर भारत का तिरंगा झंडा फहराया। गांधी और जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 26 जनवरी 1930<sup>[10]</sup> को सार्वजनिक रूप से संप्रभुता और स्व-शासन, या पूर्ण स्वराज की घोषणा जारी की। (सचमुच संस्कृत में, पूर्ण, "पूर्ण," स्व, "स्व," राज, "नियम," इसलिए "पूर्ण स्व-शासन") घोषणा में करों को वापस लेने की तत्परता और कथन शामिल था:

हम मानते हैं कि किसी भी अन्य लोगों की तरह, भारतीय लोगों का यह अहरणीय अधिकार है कि वे स्वतंत्रता प्राप्त करें और अपने परिश्रम के फल का आनंद लें और जीवन की आवश्यकताएं प्राप्त करें, ताकि उन्हें विकास के पूर्ण अवसर मिल सकें। हम यह भी मानते हैं कि यदि कोई सरकार किसी व्यक्ति को इन अधिकारों से वंचित करती है और उनका दमन करती है तो लोगों को इसे बदलने या समाप्त करने का एक और अधिकार है। भारत में ब्रिटिश सरकार ने न केवल भारतीय लोगों को उनकी स्वतंत्रता से वंचित किया है, बल्कि जनता के शोषण पर आधारित है, और आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से भारत को बर्बाद कर दिया है। इसलिए, हम मानते हैं कि भारत को ब्रिटिश कनेक्शन को तोड़ देना चाहिए और "पूर्ण स्वराज" या पूर्ण संप्रभुता और स्व-शासन प्राप्त करना चाहिए।<sup>[11]</sup>

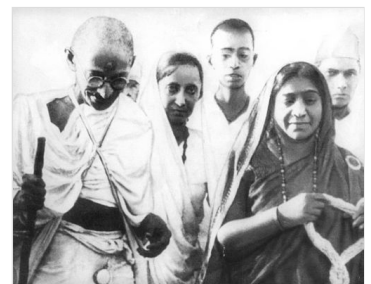
#### दांडी यात्रा



गांधी ने ब्रिटिश नमक कानूनों को तोड़ने के लिए प्रसिद्ध लवण सत्याग्रह पर अपने अनुयायियों का नेतृत्व किया।

**तिथि** 12 मार्च 1930 – 6 अप्रैल 1930

**स्थान** साबरमती, अहमदाबाद, गुजरात, भारत



महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू मार्च के दौरान

कांग्रेस कार्य समिति ने गांधी को सविनय अवज्ञा के पहले अधिनियम के आयोजन की जिम्मेदारी दी, साथ ही कांग्रेस स्वयं गांधी की गिरफ्तारी के बाद कार्यभार संभालने के लिए तैयार थी।<sup>[12]</sup> गांधी की योजना ब्रिटिश नमक कर के उद्देश्य से सत्याग्रह के साथ सविनय अवज्ञा शुरू करने की थी। 1882 के नमक अधिनियम ने अंग्रेजों को नमक के संग्रह और निर्माण पर एकाधिकार दिया, इसके संचालन को सरकारी नमक डिपो तक सीमित कर दिया और नमक कर लगा दिया।<sup>[13]</sup> नमक अधिनियम का उल्लंघन एक अपराधिक अपराध था। भले ही तट पर रहने वालों के लिए नमक स्वतंत्र रूप से उपलब्ध था (समुद्र के पानी के वाष्पीकरण द्वारा), भारतीयों को इसे औपनिवेशिक सरकार से खरीदने के लिए मजबूर किया गया था।

## ऐतिहासिक मार्च की पूर्व संध्या पर एक यादगार भाषण

गांधी जी ने कहा इस बात की पूरी संभावना है कि यह आप को दिया गया मेरा आखिरी भाषण होगा। अगर सरकार मुझे कल सुबह मार्च करने की अनुमति देती है, तब भी इस साबरमती के पवित्र तट पर यह मेरा आखिरी भाषण होगा। संभवतः ये यहां बोले जाने वाले मेरे जीवन के अंतिम शब्द हों।

मैं जो कुछ कहना चाहता था वह मैंने आपको कल ही बता दिया है। आज मैं आपको वह बताऊंगा कि मेरे और मेरे साथियों के गिरफ्तार हो जाने के बाद आपको क्या करना चाहिए। जैसा मूल रूप से तय किया गया था, जलालपुर तक मार्च करने का कार्यक्रम अवश्य पूरा किया जाना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए स्वयंसेवकों का नामांकन केवल गुजरात तक ही सीमित होना चाहिए। पिछले एक पखवाड़े के दौरान मैंने जो किया है और सुना है, मेरा मत है कि सिविल प्रतिरोधकारियों की धारा अटूट रूप से प्रवाहित होती रहेगी।

लेकिन हम सब के गिरफ्तार होने के बाद भी, शांति भंग करने की एक झलक नहीं मिलनी चाहिए। हमने विशेष रूप से अहिंसक संघर्ष में अपने सभी संसाधनों का उपयोग करने का संकल्प लिया है। कोई भी गुस्से में कोई गलती न करे। यह मेरी आशा और प्रार्थना है। मैं चाहता हूँ कि मेरी ये बातें देश के कोने-कोने तक पहुँच जाएँ। अगर मैं और मेरा साथी ऐसा करेंगे तो मेरा काम पूरा हो जाएगा। इसके बाद आपको रास्ता दिखाने की जिम्मेदारी कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की होगी और वह उनके नेतृत्व का पालन करना आप पर निर्भर होगा। जब तक मैं जलालपुर न पहुँच जाऊँ, ऐसा कुछ भी नहीं करना है कि कांग्रेस द्वारा मुझे सौंपे गए किसी भी अधिकार का उल्लंघन हो। लेकिन एक बार मेरे गिरफ्तार हो जाने पर, पूरी जिम्मेदारी कांग्रेस पर चली जाती है। इसलिए, एक पंथ के रूप में, अहिंसा में विश्वास रखने वाले किसी को भी चुप बैठने की जरूरत नहीं है। जैसे ही मुझे गिरफ्तार किया जाता है, कांग्रेस के साथ मेरा गठबंधन समाप्त हो जाता है। स्वयंसेवकों, ऐसी स्थिति में, जहाँ भी संभव हो नमक का सविनय अवज्ञा शुरू कर दिया जाना चाहिए। कांग्रेस के साथ मेरे कॉम्पैक्ट जैसे ही मैं गिरफ्तार कर लिया हूँ के रूप में समाप्त होता है। यह मामला स्वयंसेवकों में तीन प्रकार से इन कानूनों का उल्लंघन किया जा सकता है। जहाँ भी नमक का निर्माण करने की सुविधा हो, नमक बनाना एक अपराध है। वर्जित नमक को रखना और उसकी बिक्री, जिसमें प्राकृतिक नमक या नमकीन मिट्टी भी शामिल है, भी एक अपराध है। ऐसे नमक के खरीदार भी समान रूप से दोषी होंगे। वैसे ही, समुंदर के किनारे पर प्राकृतिक नमक जमा कर उसे ले जाना भी कानून का उल्लंघन है। इस तरह के नमक की बिक्री भी अपराध है। संक्षेप में, आप नमक एकाधिकार को तोड़ने के लिए इसमें से किसी एक या इन तीनों उपकरणों को चुनें।

फिर भी, हमें केवल इतने से संतोष नहीं करना है। कांग्रेस द्वारा कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया है और जहाँ भी स्थानीय कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास है, अन्य उपयुक्त उपाय अपनाए जा सकते हैं। मैंने केवल एक ही शर्त पर बल दिया है अर्थात्, स्वराज की प्राप्ति के लिए केवल साधन के रूप में सत्य और अहिंसा के बारे में हमारी प्रतिज्ञा को ईमानदारी से निभाया जाए। बाकी के लिए, हर एक को स्वतंत्रता है। लेकिन, कृपया सभी को और विविध लोगों को उनकी खुद की जिम्मेदारी पर काम करने के लिए एक लाइसेंस न दें। जहाँ स्थानीय नेता हों, वहाँ लोगों द्वारा उनके आदेशों का पालन किया जाना चाहिए। जहाँ कोई नेता न हो और केवल मुट्ठी भर लोगों को कार्यक्रम में विश्वास है, वहाँ अगर उनमें पर्याप्त आत्मविश्वास है, तो वे, जो कर सकते हैं, उसे करना चाहिए। उन्हें ऐसा करने का अधिकार नहीं, यह उनका कर्तव्य है। इतिहास ऐसे लोगों के उदाहरणों से भरा हुआ है, जो केवल आत्मविश्वास, बहादुरी और दृढ़ता के बल पर, नेतृत्व करने के लिए उभरे। हम अगर ईमानदारी से स्वराज पाने की इच्छा रखते हैं और उसे पाने के लिए बेताब हैं, तो हमारे अंदर भी, ऐसा ही आत्मविश्वास होना चाहिए। सरकार द्वारा हमारी गिरफ्तारियों की संख्या के बढ़ने से हमारा दर्जा बढ़ेगा और हमारे दिल मजबूत होंगे।

इन के अलावा कई अन्य तरीकों से काफी कुछ किया जा सकता है। शराब और विदेशी कपड़े की दुकानों पर धरना िदया जा सकता है। अगर हमारे पास अपेक्षित शक्ति हो, तो हम करों का भुगतान करने से मना कर सकते हैं। वकील प्रैक्टिस छोड़ सकते हैं। जनता सार्वजनिक मुकदमेबाजी से परहेज करके कानूनी अदालतों का बहिष्कार कर सकती है। सरकारी कर्मचारी अपने पदों से इस्तीफा दे सकते हैं। निराशा के बीच में इस्तीफा देने वाले लोग रोजगार खोने के डर के कांप रहे हैं। ऐसे लोग स्वराज के लिए अयोग्य हैं। लेकिन यह निराशा क्यों? देश में सरकारी कर्मचारियों की संख्या कुछ सौ हजार से अधिक नहीं है। बाकी के बारे में क्या? वे कहाँ जा रहे हैं? यहां तक कि स्वतंत्र भारत भी सरकारी कर्मचारियों की एक बड़ी संख्या को समायोजित करने में सक्षम नहीं होगा। एक कलेक्टर को इतने सेवकों की जरूरत नहीं होगी, जितने उसे आज मिलते हैं। वह खुद अपना नौकर होगा। हमारे भूख से मरने वाले लाखों लोग किसी तरह यह भारी व्यय वहन नहीं कर सकते। इसलिए, अगर हम काफी समझदार हैं, तो हमें सरकार रोजगार को अलविदा कहना चाहिए, चाहे यह एक न्यायाधीश का पद हो या एक चपरासी का। सरकार के साथ सहयोग करने वाले लोगों को एक तरफ कर दें, चाहे यह करों का भुगतान करना हो या खिताब रखना, या सरकारी स्कूलों में बच्चों को भेजना अथवा किसी अन्य रूप में हो, जहाँ तक संभव हो सभी प्रकार से उनके सहयोग को वापस लौटा दें। इसके अतिरिक्त महिलाएं हैं, जो इस संघर्ष में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हो सकती हैं। इसी आंदोलन के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार जी ने जंगल सत्याग्रह किया जिसके चलते उन्हें 9 मास का सश्रम कारावास भी हुआ।

आप इसे मेरी इच्छा मान सकते हैं। यह वह संदेश था, जिसे मैं मार्च आरंभ करने या जेल जाने से पहले आप को देना चाहता था। मैं चाहता हूँ कि कल सुबह या अगर उस से पहले मैं गिरफ्तार हो जाता हूँ, तो कल आरंभ होने वाले युद्ध का कोई निलंबन या परित्याग नहीं होना चाहिए। मैं बेसब्री से इस खबर का इंतजार करूंगा कि हमारे समूह के गिरफ्तार किए जाते ही दस नए समूह तैयार हो गए हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि भारत में ऐसे लोग हैं जो मेरे द्वारा शुरू किए गए हमारे इस काम को पूरा करेंगे। मुझे अपने कार्य के औचित्य और हमारे हथियारों की पवित्रता में विश्वास है। और जहाँ तरीका सही है, वहाँ निस्संदेह रूप से भगवान अपने आशीर्वाद के साथ मौजूद हैं। और जहाँ ये तीनों मिल जाएँ, वहाँ हार असंभव है। एक सत्याग्रही हमेशा विजयी होता है, चाहे वह स्वतंत्र हो या उसे जेल में रखा जाए। वह केवल तभी परास्त होता है जब वह सत्य और अहिंसा को छोड़ देता है और अंतरमन की आवाज को अनसुना कर देता है। इसलिए, अगर एक भी सत्याग्रही की हार होती है, तो वह खुद इसका कारण होता है। भगवान आप सब का भला करे और कल शुरू होने वाले संघर्ष में पथ से सभी बाधाओं को दूर करे।

## आंदोलन का प्रभाव

सविनय अवज्ञा आंदोलन को विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग रूपों में शुरू किया गया, जिसमें विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर विशेष जोर दिया गया। पूर्वी भारत में चौकीदारी कर का भुगतान करने से इनकार कर दिया गया, जिसके अंतर्गत नो-टैक्स अभियान (No-Tax Campaign) बिहार में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। जे.एन. सेनगुप्ता ने बंगाल में सरकार द्वारा प्रतिबंधित पुस्तकों को खुलेआम पढ़कर सरकारी कानूनों की अवहेलना की। महाराष्ट्र में वन कानूनों की अवहेलना बड़े पैमाने पर की गई। यह आंदोलन अवध, उड़ीसा, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और असम के प्रांतों में आग की तरह फैल गया।

### एक सुनियोजित आंदोलन

महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के बनाए अन्यायपूर्ण नमक कानून के विरोध को अंग्रेजों के विरोध के लिए हथियार बनाया। इस यात्रा को भारी तादात में जन समर्थन मिला और जैसे जैसे यात्रा आगे बढ़ती गई बहुत सारे लोग जुड़ते चले गए।

## रोज 16 किलोमीटर चलते थे

अंग्रेजों के नमक कानून के खिलाफ गांधीजी ने अपने 79 साथियों के साथ 240 मील यानि 386 कोलीमीटर लंबी यात्रा कर नवसारी के एक छोटे से गांव दांडी पहुंचे जहां समुद्री तट पर पहुंचने पर उन्होंने सार्वजनिक रूप से नमक कानून बनाकर नमक कानून तोड़ा। 25 दिन तक चली इस यात्रा में बापू रोज 16 किलोमीटर की यात्रा करते थे, जिसके बाद वे 6 अप्रैल को दांडी पहुंचे थे। लोगों ने दिया साथ 12 मार्च 1930 का दिन भारत की आजादी की लड़ाई में अहम पड़ाव माना जाता है। यह वह समय था जब कुछ महीने पहले ही कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज का संकल्प लिया था। इससे पहले साल 1920 में असहयोग आंदोलन चोरीचोरा हिंसा की भेंट चढ़ गया था। इसके बाद यह पहला इतना बड़ा जनआंदोलन था जिसमें लोगों ने बापू का भरपूर साथ दिया और यह आंदोलन पूरी तरह अहिंसक रहते हुए सफल रहा।

## तोड़ा अंग्रेजी हुकूमत का घमण्ड

दांडी मार्च खत्म होने के बाद चल असहयोग आंदोलन के तहत बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां हुईं। कांग्रेस के प्रथम पंक्ति के सभी नेता गिरफ्तार होते रहे, लेकिन आंदोलनकारियों और उनके समर्थकों ने किसी तरह से हिंसा का सहारा नहीं लिया। यहां तक कि अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर ने अंग्रेजों के सत्याग्रहियों पर हुए अत्याचार की कहानी दुनिया के सामने रखी तो पूरी दुनिया में ब्रिटिश साम्राज्य की बहुत बेइज्जती हुई।

## भारतीय स्वतंत्रता की नींव

इस आंदोलन का खात्मा गांधी इरविन समझौते के साथ हुआ। इसके बाद अंग्रेजों ने भारत को स्वायत्तता देने के बारे में विचार करना शुरू कर दिया था। 1935 के कानून में इसकी झलक भी देखने को मिली और सविनय अवज्ञा की सफलता के विश्वास को लेकर गांधी जी ने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया जिसने अंग्रेजों को भारत छोड़ने को मजबूर होना पड़ा।

## संघ का योगदान

संघ का कार्य अभी मध्य प्रान्त में ही प्रभावी हो पाया था। यहां नमक कानून के स्थान पर जंगल कानून तोड़कर सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार संघ के सरसंघचालक का दायित्व डॉ. लक्ष्मण वासुदेव परांजपे को सौंप स्वयं अनेक स्वयंसेवकों के साथ सत्याग्रह करने गए। सत्याग्रह हेतु यवतमाल जाते समय पुसद नामक स्थान पर आयोजित जनसभा में डॉ. हेडगेवार जी के सम्बोधन में स्वतंत्रता संग्राम में संघ का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। उन्होंने कहा था- स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजों के बूट की पॉलिश करने से लेकर उनके बूट को पैर से निकालकर उससे उनके ही सिर को लहुलुहान करने तक के सब मार्ग मेरे स्वतंत्रता प्राप्ति के साधन हो सकते हैं। मैं तो इतना ही जानता हूं कि देश को स्वतंत्र कराना है। डॉ. हेडगेवार जी के साथ गए सत्याग्रही जल्ये में अप्पा जी जोशी (बाद में सरकार्यवाह), दादाराव परमार्थ (बाद में मद्रास में प्रथम प्रांत प्रचारक) आदि 12 स्वयंसेवक शामिल थे। उनको 9 मास का सश्रम कारावास दिया गया। उसके बाद अ.भा. शारीरिक शिक्षण प्रमुख (सर सेनापति) मार्तण्ड जोग जी, नागपुर के जिला संघचालक अप्पा जी हळदे आदि अनेक कार्यकर्ताओं और शाखाओं के स्वयंसेवकों के जल्यों ने भी सत्याग्रहियों की सुरक्षा के लिए 100 स्वयंसेवकों की टोली बनाई, जिसके सदस्य सत्याग्रह के समय उपस्थित रहते थे। 8 अगस्त को गढ़वाल दिवस पर धारा 144 तोड़कर जुलूस निकालने पर पुलिस की मार से अनेक स्वयंसेवक घायल हुए। विजयादशमी 1931 को डाक्टर जी जेल में थे, उनकी अनुपस्थिति में गांव-गांव में संघ की शाखाओं पर एक संदेश पढ़ा गया, जिसमें कहा गया था – देश की परतंत्रता नष्ट होकर जब तक सारा समाज बलशाली और आत्मनिर्भर नहीं होता, तब तक रे मना ! तुझे निजी सुख की अभिलाषा का अधिकार नहीं।

स्वभाविक है कि देश को स्वतंत्रता किसी एक दल, एक परिवार, एक व्यक्ति, एक समुदाय विशेष के प्रयासों से नहीं बल्कि समूचे देशवासियों के संयुक्त प्रयासों से मिली है। यह बात दीगर है कि एक दल इसका विशेष श्रेय लेता रहा और स्वतंत्रता संग्राम को राजनीतिक लाभ लेने का माध्यम भी बना चुका है। चाहे इन कदमों को उस दल के विवेक पर छोड़ सकते हैं परंतु स्वतंत्रता संग्राम में दूसरों पर, विशेषकर संघ जैसे देशभक्त व राष्ट्रनिष्ठ संगठन पर अंगुली उठाई जाए इसका किसी को अधिकार नहीं दिया जा सकता।

# महत्त्व

इस आंदोलन के परिणामस्वरूप भारत में ब्रिटेन से होने वाला आयात काफी गिर गया। उदाहरण के लिये ब्रिटेन से कपड़े का आयात आधा हो गया। यह आंदोलन पिछले आंदोलनों की तुलना में अधिक व्यापक था, जिसमें महिलाओं, किसानों, श्रमिकों, छात्रों और व्यापारियों तथा दुकानदारों जैसे शहरी तत्वों ने बड़े पैमाने पर भागीदारी की। अतः अब कॉन्ग्रेस ने अखिल भारतीय संगठन का स्वरूप प्राप्त कर लिया था। इस आंदोलन को कस्बों और देहात दोनों में गरीबों तथा अनपढ़ों से जो समर्थन हासिल हुआ, वह उल्लेखनीय था। इस आंदोलन में भारतीय महिलाओं की बड़ी संख्या में खुलकर भागीदारी उनके लिये वास्तव में मुक्ति का सबसे अलग अनुभव था। यद्यपि कॉन्ग्रेस ने वर्ष 1934 में सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया, लेकिन इस आंदोलन ने वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की प्रगति में महत्त्वपूर्ण चरण को चिह्नित किया।

# अहिंसक प्रतिरोध का प्रतीक

दांडी मार्च, जिसे नमक सत्याग्रह, दांडी मार्च और दांडी सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है, महात्मा गांधी के नेतृत्व में औपनिवेशिक भारत में अहिंसक सविनय अवज्ञा का एक कार्य था। ब्रिटिश नमक एकाधिकार के खिलाफ कर प्रतिरोध और अहिंसक विरोध के प्रत्यक्ष कार्रवाई अभियान के रूप में चौबीस दिवसीय मार्च 12 मार्च 1930 से 6 अप्रैल 1930 तक चला। यह मार्च भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक था और इसने लाखों भारतीयों को ब्रिटिश शासन से आजादी के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।<sup>[14]</sup> भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ गांधीजी ने सविनय अवज्ञा (सत्याग्रह) के एक बड़े अभियान के रूप में मार्च पहला कदम था, जो 1931की शुरुआत में प्रभावशाली हुआ और भारतीय जनता ने महात्मा गाँधी का समर्थन किया और सत्याग्रह ने दुनिया भर के लोगों का ध्यान केन्द्रित किया। भारत में नमक उत्पादन और वितरण लंबे समय से ब्रिटिशों का एक आकर्षक एकाधिकार था।<sup>[15]</sup>

कई कानूनों के माध्यम से, भारतीयों को स्वतंत्र रूप से नमक बनाने या बेचने पर रोक लगा रखी थी, और इसके बजाय भारतीयों को नमक महंगा खरीदना पड़ता था, नमक पर भारी रूप से कर लगाया जाता था, जिसे अक्सर आयात किया जाता था। इसने बहुत से भारतीयों को प्रभावित किया, जो लोग गरीब थे, वो इसे खरीदना नहीं चाहते थे।<sup>[16]</sup>

19वीं शताब्दी में नमक कर के खिलाफ भारतीयों ने विरोध का प्रदर्शन शुरू किया और पूरे उपमहाद्वीप के ब्रिटिश शासनकाल में यह एक बड़ा विवादित मुद्दा बन गया। 1930 के शुरुआत में, गांधी ने सदाबहार नमक कर के खिलाफ उच्च प्रदर्शन करने का फैसला किया, जो कि अब पश्चिम में भारतीय राज्य गुजरात के माध्यम से शुरू हुआ उन्होंने अपने आश्रम (अहमदाबाद के पास) अरब सागर तट पर 12मार्च को पैदल, कई दर्जन स्वयं सेवकों के साथ यात्रा शुरू की ।<sup>[17]</sup>

प्रत्येक दिन की यात्रा के बाद समूह उस मार्ग पर एक नए गांव में, जहां गरीब जनता पर लगाये जाने वाले कर की अन्याय के खिलाफ गांधी रेल को सुनने के लिए अधिक से अधिक भीड़ इकट्ठा होती थी। सैकड़ों से भी अधिक अनुयायियों के मूल समूह में शामिल हुए, क्योंकि वे 5 अप्रैल तक समुद्र तक पहुंचना चाहते थे , और सभी 5 अप्रैल को द्रूतावास के करीब 240 मील (385 किमी) की यात्रा के बाद दांडी पहुंचे।

6 अप्रैल की सुबह, गांधी और उनके अनुयायियों ने मिलकर समुद्र के किनारे पर नमक को मुट्ठी भर उठाया, इस प्रकार तकनीकी रूप से “उत्पादन” नमक और कानून तोड़ दिया, और गांधीजी ने सभी देश वासियों को नमक बनाने की आज्ञा दी।



उस दिन कोई गिरफ्तारी नहीं हुई थी, और गांधी ने अगले दो महीनों के लिए नमक कर के खिलाफ अपना सत्याग्रह जारी रखा, सिविल अवज्ञा के कृत्यों के द्वारा नमक कानूनों को तोड़ने के लिए अन्य भारतीय भी प्रोत्साहित हुए।

अप्रैल में जवाहरलाल नेहरू सहित हजारों लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में बंद कर दिया गया, जिसमें उन्होंने मई के शुरू में खुद को सूचित किया था कि उन्होंने पास के धर्मशाला नमक के काम पर जाने के इरादे से लॉर्ड इरविन (भारत के वायसराय) को सूचित किया था।

गांधी की गिरफ्तारी के समाचार ने कई हजारों लोगों को सत्याग्रह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। 21 मई को कवि सरोजनी नायडू के संरक्षण में योजनाओं के रूप में नमक का काम पर मार्च आगे बढ़ाया गया। पुलिस ने कुछ 2,500 शांतिपूर्ण मार्शकारों पर हमला किया और पीटा। वर्ष के अंत तक, लगभग 60,000 लोगों कारावास में दल दिया गया।

गांधी को जनवरी 1931 में हिरासत से रिहा किया गया और तब लॉर्ड इरविन के साथ में सत्याग्रह अभियान को समाप्त करने बारे में बात की, बाद में एक संघर्ष के विराम की घोषणा हुई, जिसे गांधी-इरविन संधि में औपचारिक रूप दिया गया था, जिस पर 5 मार्च को हस्ताक्षर किए गए थे।

द्वितीय गोलमेज सम्मलेन (सितंबर-दिसंबर 1931) में भाग लेने के लिए कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में गाँधीजी लन्दन गए। वहाँ उन्होंने भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की माँग की, जिसे ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वीकार नहीं किया गया।

## दांडी यात्रा का नैतिक

महात्मा गांधी के नेतृत्व में ऐतिहासिक नमक मार्च को फिर से लागू करने के लिए पैदल मार्च को हरी झंडी दिखाते हुए, प्रधान मंत्री ने याद किया कि नमक तब ईमानदारी, विश्वास, वफादारी, श्रम, समानता और आत्मनिर्भरता का प्रतिनिधित्व करता था।

गांधी जी के लिए उनका जीवन ही उनका संदेश था। उन्होंने कभी भी एक भी ऐसा शब्द नहीं बोला जिसका उनके अपने काम से कोई संबंध न हो, चाहे वह तुच्छ हो या अन्यथा। उनका हर कार्य विनम्रता, मानवतावाद की गहरी भावना, व्यक्ति, राष्ट्र और पूरे ग्रह की आत्मनिर्भरता से ओत-प्रोत था।

हमारे वर्तमान राजनेता सार्वजनिक समारोहों और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आदर्शवादी बातें बोलते हैं। लेकिन हर काम में, वे अपने ही शब्दों को धोखा देते हैं: वे ड्रम बजाते हैं और उच्च डेसिबल ध्वनियाँ उत्पन्न करते हैं, लेकिन इसका कोई मतलब नहीं होता।

## संदर्भ

- "National Salt Satyagraha Memorial | List of names" (<http://www.dandimemorial.in/pdf/List-of-1930-Salt-Marchers.pdf>) (PDF). *Dandi Memorial*. अभिगमन तिथि: 11 August 2019.
- "Salt March". (<https://www.oxfordreference.com/viewbydoi/10.1093/acref/9780195176322.013.1384>) *Oxford Encyclopedia of the Modern World* (2008)। Oxford University Press।
- "Mass civil disobedience throughout India followed as millions broke the salt laws", from Dalton's introduction to Gandhi's *Civil Disobedience*, *Gandhi and Dalton*, p. 72.
- Dalton, p. 92.
- Johnson, p. 234.
- Ackerman, p. 106.
- "Its root meaning is holding onto truth, hence truth-force. I have also called it Love-force or Soul-force." Gandhi (2001), p. 6.
- Martin, p. 35.
- Eyewitness Gandhi* (<https://books.google.com/books?id=hY3WAwAAQBAJ&q=dharasana+navsari&pg=PA45>) (1 ed.). London: Dorling Kindersley Ltd. 2014. p. 44. ISBN 978-0241185667. अभिगमन तिथि: 3 September 2015.
- Wolpert, Stanley A. (2001). *Gandhi's passion : the life and legacy of Mahatma Gandhi* (<https://archive.org/details/gandhispassionli00wolp/page/141>). Oxford University Press. pp. 141 (<https://archive.org/details/gandhispassionli00wolp/page/141>). ISBN 019513060X. OCLC 252581969 (<https://search.worldcat.org/oclc/252581969>).
- Decourcy, Elisa. "Just a grain of salt?: Symbolic construction during the Indian nationalist movement," *Melbourne Historical Journal*, 2010, Vol. 38, pp 57–72
- Gandhi, M. K. (2001). *Non-Violent Resistance (Satyagraha)* ([https://archive.org/details/nonviolentresist0000gand\\_w6v0](https://archive.org/details/nonviolentresist0000gand_w6v0)). Courier Dover Publications. ISBN 978-0-486-41606-9.
- Masselos, Jim. "Audiences, Actors and Congress Dramas: Crowd Events in Bombay City in 1930," *South Asia: Journal of South Asian Studies*, April 1985, Vol. 8 Issue 1/2, pp 71–86
- सन्दर्भ त्रुटि: <ref> का गलत प्रयोग; Wolpert1999 नाम के संदर्भ में जानकारी नहीं है।**
- Ackerman, p. 83.
- Dalton, p. 91.
- <https://www.1hindi.com/salt-satyagraha-short-note-in-hindi-%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A5%80-%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%9A/> (<https://www.1hindi.com/salt-satyagraha-short-note-in-hindi-%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A5%80-%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%9A/>).  **Missing or empty |title= (help)**
- "Dandi March: नमक सत्याग्रह के बारे में सिर्फ 5 प्वाइंट में जानें वो सबकुछ जो आपके लिए जरूरी है - Salt March Date History Facts All You Need To Know about Jagran Special" (<https://www.jagran.com/news/national-salt-march-date-history-facts-all-you-need-to-know-about-jagran-special-19036522.html>). *Jagran*. अभिगमन तिथि: 28 अक्टूबर 2023.
- "Essay On Dandi March For Students | India CSR" (<https://indiaccsr.in/essay-on-dandi-march-for-students/>). 5 अक्टूबर 2023. अभिगमन तिथि: 28 अक्टूबर 2023.
- "Write a Short note on Dandi March" ([https://unacademy-com.translate.googleusercontent.com/translate\\_a/short-note-on-dandi-march/?x\\_tr\\_sl=en&x\\_tr\\_tl=hi&x\\_tr\\_hl=hi&x\\_tr\\_pto=tc](https://unacademy-com.translate.googleusercontent.com/translate_a/short-note-on-dandi-march/?x_tr_sl=en&x_tr_tl=hi&x_tr_hl=hi&x_tr_pto=tc)). *Unacademy*. अभिगमन तिथि: 28 अक्टूबर 2023.

## बाहरी कड़ियाँ

- नमक सत्याग्रह की न्यूज़रील फुटेज (<http://www.harappa.com/wall/1930.html>)
- नमक मार्च पुनः अधिनियमन स्लाइड शो (<http://specials.rediff.com/news/2005/mar/15sld1.htm>)
- गांधी का 1930 मार्च फिर से अधिनियमित ([http://news.bbc.co.uk/2/hi/south\\_asia/4342745.stm](http://news.bbc.co.uk/2/hi/south_asia/4342745.stm)) (बीबीसी न्यूज़)
- भारत के प्रधान मंत्री द्वारा भाषण (<https://web.archive.org/web/20071118013933/http://pmindia.nic.in/speech/content.asp?id=93>) दांडी मार्च की 75वीं वर्षगांठ पर
- दांडी मार्च (<http://www.gandhiheritageportal.org/dandi-march>) समयरेखा



**Salt March** से संबंधित मीडिया विकिमिडिया कॉमन्स पर उपलब्ध है।